1. पुलोरम बीमारी

पुलोरम या सफेद दस्त मुर्गियों का घातक रोग है जो सालमोनेला पुलोरम नामक जीवाणु द्वारा होता है। यह तीन सप्ताह से कम उम्र के चुजों पर आक्रमण करता है। और वे अक्सर मर जाते है, और जो इस रोग से बच जाते है उनके अण्डों में इस रोग के जीवाणु प्रवेश कर जाते है। इस प्रकार इन अण्डों से निकले चूजों को भी यह रोग लग जाता है।

लक्षण–

1. मुर्गियों में अण्डे देने की प्रतिशत मात्रा कम हो जाये
2. एक सप्ताह से अधिक आयु के चूजों को प्यास बहुत लगे, झुण्ड में इधर उधर चक्कर काटें, सांस लेने में तकलीफ हो और सफेद रंग के पानी जैसे दस्त लग जायें ।
3. चूजे अधिक संख्या में मरें।
4. मुर्गियां अण्डे कम दे, कुछ मर जाएं और अन्य बार–बार सफेद रंग की बीट करें तब आप उनमें पुलोरमा रोग की फेलने की शंका कर सकते है।

यदि आप मरें चूजों को काट कर देखें तो आपको मालूम होगा कि–

1. उनके फेफडों पर आवश्यकता से अधिक खून जमा है।
2. लीवर पर भुरे रंग के धब्बे है।
3. दिल के उपरी भाग में थोड़ी सूजन है।

रोग की रोकथाम –

जीवाणु रोधक (एन्टीबायोंटिक) दवाएं जैसे सल्फोनामइड्स एवं नाइट्रोफयूरास से इस बीमारी की रोकथाम की जा सकती है। लेकिन यह दवाएं पुरी तरह से इस बीमारी को रोकथाम नही कर पाती है अतः रोगी पक्षियों को नष्ट कर देना ही सबसे अच्छा है।

2. कुक्कुटों में जुकाम

मुर्गियों की जुकाम से रक्षा करना अतिआवश्यक है यह भंयकर रोग है जो एक प्रकार के वायरस के द्वारा फैलाया जाता है 8 से 16 सप्ताह की आयु वाले पक्षियों पर इसका आक्रमण विशेष होता है। फलस्वरुप बहुत से पक्षी मर जाते है।

लक्षण –

पहले पक्षी के नथुनों और आंखों में से पानी बहने लगता है बाद में यह पानी गाड़ा हो जाता है आंखों की पलके चिपक जाती है। पलकों और आखों की एक या दोनो पुतलियों के बीच पस जैसा पदार्थ इकट्ठा हो जाता है। पक्षियों को सांस लेने में बड़ी कठिनाई होती है। वे सुस्त और उदास हो जाते है और बार–बार सिर हिलाते है। वे खांसने और छिकने लगते है। उनका चेहरा मुंह द्वारा सांस लेने के कारण सूज जाता है।

रोकथाम के उपाय

रोकथाम के उपाय –

1. बहुत अधिक पक्षी एक ही स्थान पर न रखें।
2. हवा के आने जाने का अच्छा प्रंबध करें।
3. नमी ना होने दं।
4. जीवाणु रोधक दवा (एन्टीबायोटिक) पानी में घोलकर पक्षी को पिलावें।
5. पक्षियों का टीकाकरण समयानुसार करें।

3. कुक्कुटों में खुनी दस्त

खूनी दस्त (काक्सीडियोसिस) लगने से विशेष कर तीन से छः सप्ताह के आयु वाले चूजे मर जाते है। रोग आरंभ होने पर चूजे सुस्त हो जाते है रोगी चूजें इक्टठें होकर चारों ओर चक्कर काटते फिरते है। उनके पंख मुड जाते है। पलके झपकने लगती है। भुख नहीं लगती और बार–बार खून के दस्त होते है। बीट के साथ खून आता है। अधिकाशं पक्षी खूनी दस्त लगने के बाद एक सप्ताह से दस दिन के अन्दर मर जाते है।

पक्षियों को रोग कैसे लगता है –

यह रोग परजीवि से होता है जो पक्षी के खून में रहता हैं वह बीट के साथ खूनी दस्त के रुप में बाहर आता है। जब अन्य पक्षी खूनी दस्त से दूषित पदार्थो (दाना, पानी) को खा लेते है तब उनको भी यह रोग हो जाता है। छःसप्ताह से ज्यादा उम्र वाले पक्षियों को इस बीमारी से कोई हानि नही होती है परन्तु स्वस्थ चूजों (तीन–छः उम्र) में यह रोग उनके द्वारा फेल सकता है।

रोग की रोकथाम –

1. मुर्गी घर एवं दड़बों को अच्छी प्रकार साफ सुथरा रखें।
2. दड़बों में पक्षियों की संख्या अधिक नही रखें।
3. हर रोज फर्श पर बीट साफ करें।

रोगी कुक्कुटों का इलाज –

मुर्गियों के भोजन या पानी में सल्फामेजाथीन, सल्फाक्यूनाक्सलीन या सल्फाग्वानिडीन दवा देना चाहिए।

4. कुक्कुटों में रानीखेत बीमारी

रानीखेत मुर्गीयों का एक भंयकर रोग है। और कभी–कभी इस रोग से सारी मुर्गियां मर जाती है, यह रोग सभी आयु की मुर्गियों पर आक्रमण करता है। इस रोग के कारण मुर्गी पालकों को विशेष कर बरसात में भारी हानि होती है।

लक्षण– जब चूजों पर इस रोग का मामुली आक्रमण होता है तब–

1. वे सुस्त और उनके पंख मुड़े दिखाई देते है, आंखें बंद रखतें है, भूख नही लगती है।
2. जल्दी जल्दी सांस लेते है, और कभी–कभी सांस के साथ सीटी की आवाज निकलती है। मुंह से सांस लेते है।
3. ज्वार हो जाता है, प्यास बहुत लगती है और पीले रंग के पानी जैसे दस्त लग जाते है।
4. चोंच से कफ निकालने के लिये अक्सर सिर हिलाते हुए दिखाई देते है।

रोग के बढ़ने पर चूजें मरने लगते है इसके आक्रमण से जो चूजे बच जाते है उनके गरदन या टांगां को लकवा मार जाता है। मुर्गियां इस रोग से ठीक होने के बाद दिखने में तो ठीक लगती है। परन्तु आम तौर पर अण्डे नही देती है। कभी– कभी पक्षी की गरदन पीछे की ओर मुड़ जाती है।

रोग की भंयकर अवस्था में चूजों में इस बीमारी के केवल कुछ ही लक्षण दिखाई देते है। ओर वे अचानक मर जाते है। परन्तु प्रोढ़ पक्षी कुछ देर से मरते है।

रोग का कारण –

यह रोग एक प्रकार के विषाणु के कारण होता है जो आंखों से दिखाई नहीं देते है।